आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2486 • उदयपुर, शनिवार 16 अक्टूबर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

संस्थान द्वारा हैदराबाद (तेलगांना) में राशन वितरण

नारायण सेवा संस्थान, इसके आश्रम व शाखाओं द्वारा कोरोना के प्रकोप के समय से ही जरूरतमंद परिवारों को राशन पहुंचाने का सेवा प्रारंभ की थी। समय की आवश्यकता को देखते हुए यह सेवा अनवरत हो रही है।

26 सितम्बर 2021 को एक राशन वितरण शिविर हैदराबाद (तेलगांना) में श्री श्याममंदिर कांचीपुरम्– हैदराबाद में संपन्न हुआ। इसमें 77 परिवारों को राशन प्रदान किया गया।

शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान इन्द्रकुमार जी अग्रवाल (सचिव–श्याम मंदिर सेवा समिति), अध्यक्ष श्रीमान नरेशकुमार जी डाकोतिया (कोषाध्यक्ष–श्याम मंदिर सेवा समिति), विशिष्ट अतिथि श्रीमान प्रह्मपादराय जी, एवं श्री रामदेव जी अग्रवाल, श्री राजकुमार जी विघ, श्री एस. सुमित्रा जी, श्री पण्डित रामशरण जी, श्री उत्तम जी जैन डामरानी (समाजसेवी) आदि पधारे। शिविर में प्रभारी श्रीमान् महेन्द्रसिंह जी, श्रीमती संध्या रानी, श्री के. अरूण जी ने व्यवथाएं देखी। प्रत्येक परिवार को राशन किट में 15 किलो आटा, 2 किलो दाल, 5 किलो चावल, 2 किलो तेल, 4 किलो चीनी, 1 किलो नमक एवं मसाले प्रदान किए गए।

संस्थान द्वारा बरेली में राशन सेवा

नारायण सेवा संस्थान यों तो दिव्यांगता मुक्ति अभियान में प्रमुख रूप से सेवारत है किंतु कोरोना काल में जरूरतमंदों के लिये विविध प्रकार की सेवा में अग्रणी रहा है। आप सभी के आशीर्वाद से देशभर के करीब 50 हजार परिवारों को राशन–सामग्री प्रदान करने का सौभाग्य पाया है। यह प्रक्रिया अनवरत जारी है।

ऐसा ही एक राशन वितरण शिविर नारायण गरीब परिवार राशन–योजना के अंतर्गत नारायण सेवा संस्थान आश्रम बरेली (उत्तरप्रदेश) में आयोजित किया गया। नारायण सेवा संस्थान की इस शाखा द्वारा कुल 60 परिवारों को राशन–किट प्रदान किये गये। शिविर प्रभारी श्री मुकेश जी के अनुसार इस कार्यक्रम में जो अतिथिगण पधारे उनके शुभनाम निम्नलिखित हैं–मुख्य अतिथि श्रीमान अटेश जी गुप्ता, अध्यक्ष श्रीमान गोल्डी जी गुप्ता, विशिष्ट अतिथि श्रीमान रानू जी गुप्ता, श्रीमान अनिल जी गुप्ता, श्रीमान् सुदेश जी गुप्ता, श्रीमान संजीव जी गुप्ता, श्रीमती सीमा जी,(समाजसेवी), एवं श्रीमान कंवरपाल सिंह जी (शाखा सेवा प्रेरक बरेली)।

शिविर में प्रभारी श्री मुकेश जी शर्मा ने व्यवथाएं देखीं। प्रत्येक परिवार को राशन किट में 15 किलो आटा, 2 किलो दाल, 5 किलो चावल, 2 किलो तेल, 4 किलो चीनी, 1 किलो नमक एवं मसाले भेंट किए गए।

दीपक के जीवन में उजाला

घर में पहली संतान हुई, हर्ष का वातावरण था। किन्तु वह स्थायी नहीं रह पाया। बच्चे ने जन्म तो लिया, लेकिन शारीरिक विकृति के साथ। बाएं पांव में घुटने के नीचे वाले हिस्से में हड्डी थी ही नहीं। पांव मात्र मांस का लोथड़ा था।

राजस्थान के राजसमंद जिले की खमनोर तहसील के मचींद गांव निवासी किशनलाल की पत्नी राधाबाई ने उदयपुर के बड़े सरकारी अस्पताल में 2014 में पुत्र को जन्म दिया। डॉक्टरों ने शिशु की उक्त स्थिति को देखते हुए घुटने तक बायां पांव काटना जरूरी समझा। उन्होंने माता–पिता को बताया कि यदि ऐसा नहीं किया गया तो बच्चे के शरीर में संक्रमण फैल सकता है।

माता–पिता ने दुःखी मन से जन्म के तीसरे ही दिन बच्चे का पांव काटने की स्वीकृति दी। मजदूरी करके परिवार चलाने वाले किशनलाल ने बताया कि करीब 2 माह बाद पांव का घाव सूखा और वे बच्चे को घर ले आए।

पिछले सात साल बच्चे की दिव्यांगता को देखते हुए किस तरह काटे और कैसी पीड़ा झेली इसका वे शब्दों में बयां नहीं कर सकते। ज्यों–ज्यों बच्चा बड़ा होता गया उसका दुःख भी बड़ा होता गया। सन् 2020 में उन्होंने नारायण सेवा संस्थान का निःशुल्क कृत्रिम अंग लगाने का टी.वी. पर कार्यक्रम देखा था। जो उन्हें उम्मीद की एक किरण जैसा लगा।

संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल ने बताया कि दीपक को लेकर उसके परिजन संस्थान में आए थे। तब कृत्रिम पैर लगाया गया। उम्र के साथ लम्बाई बढ़ने पर कृत्रिम पांव थोड़ा छोटा पड़ गया। जिसे बदलवाने हेतु शुक्रवार को दीपक अपने मामा के साथ आया। उसे कृत्रिम अंग निर्माण शाखा प्रभारी डॉ. मानस रंजन साहू ने उसके नाप का कृत्रिम पांव बनाकर पहनाया। वह अब खड़ा होकर चल सकता है।

सेवा का यह काम आपके सहयोग के बिना कैसे होगा सम्भव

NARAYAN HOSPITALS

पशुवत जिन्दगी जी रहे दिव्यांग भाई बहिनों को अपने पांवों पर चलाने के लिए कृपया करें योगदान

ऑपरेशन	सहयोग राशि (रूपये)	ऑपरेशन	सहयोग राशि (रूपये)
501	1700000	40	151000
401	1401000	13	52500
301	1051000	05	21000
201	711000	03	13000
101	361000	01	5000

NARAYAN LIMBS & CALIPERS

रेंग रेंग कर चलने वाले दिव्यांगजनों को सहायक उपकरणों का सहयोग देकर बनाये सशक्त

सहायक उपकरण विवरण	सहयोग राशि (रूपये)
कृत्रिम अंग	10000
ट्राई साईकिल	5000
व्हील चेयर	4000
केलिपर	2000
बैसाखी	500

NARAYAN VOCATIONAL ACADEMY

दिव्यांगों को स्वावलम्बी बनाने के लिए संस्थान द्वारा दिये जा रहे प्रशिक्षणों में आपका अनुदान हो

मोबाईल/ कम्प्युटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सोजन्य राशि	
30 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 225000 रू.	5 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 37500 रू.
20 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 150000 रू.	3 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 22500 रू.
10 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 75000 रू.	1 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 7500 रू.

दान सहयोग हेतु सम्पर्क करें - 0294-6622222, 7023509999

NARAYAN PARA SPORTS ACADEMY

प्रतिभावान दिव्यांग बन्धुओं को खेल प्रशिक्षण देने तथा खेल अकादमी स्थापित करने के लिए कृपया करें मदद

निर्माण सहयोगी बनें	51000 रू.

NARAYAN ROTI

प्यासे को पानी, भुखें को भोजन, बीमार को दवा, यही है नारायण सेवा- कृपया करें भोजन सेवा

विवरण (प्रतिदिन)	सहयोग राशि (रूपये)
नाश्ता, दोपहर व रात्रि भोजन सहयोग	37000
दोपहर व रात्रि भोजन सहयोग	30000
दोपहर अथवा रात का भोजन सहयोग	15000
केवल नाश्ता सहयोग	7000

वर्ष में एक दिन 151 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चो के लिए भोजन सहयोग

NARAYAN EDUCATION ACADEMY

कृपया विद्या का दान देकर गरीब बच्चों का करे उद्धार

प्रति छात्र शिक्षा सहयोग (प्रति वर्ष)	36000 रू.
प्रति छात्र शिक्षा सहयोग (प्रति माह)	3000 रू.

NARAYAN APNA GHAR

जिनका कोई नही है इस दुनिया में..... ऐसे अनाथ बच्चों को ले गोद और उनकी शिक्षा में करें मदद

प्रति बालक (18 वर्ष तक) सहयोग	100000 रू.

NARAYAN COMMUNITY SEVA

दूरस्थ एवं आदिवासी क्षेत्रों में संस्थान की ओर से चलाई जा रही राशन वितरण, वस्त्र एवं पोशाक सेवा में मदद करें

50 मजदूर परिवार	100000 रू.
25 मजदूर परिवार	50000 रू.
5 मजदूर परिवार	10000 रू.
3 मजदूर परिवार	6000 रू.
1 मजदूर परिवार	2000 रू.

कैलाश 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन

समाज में हेय दृष्टी से देखे जाने वाले दिव्यांग बन्धुंओं को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए हम कृतसंकल्परत है कृपया सामाजिक सेवा में आप भी हमारे साथ आये।

प्रशांत अग्रवाल
अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष

अबोहर (पंजाब) में दिव्यांग सहायता शिविर

नारायण सेवा संस्थान की शाखा अबोहर (पंजाब) के तत्वावधान में गत 12 सितम्बर 2021 को दिव्यांग जांच, ऑपरेशन चयन, कृत्रिम अंग माप एवं सहायक उपकरण वितरण शिविर आयोजित हुआ।

शिविर सहयोगकर्ता श्री बालाजी समाज सेवा संघ रहा। शिविर में 210 दिव्यांगों की ओपीडी, 39 का ऑपरेशन चयन, कैलिपर्स का माप एवम् कृत्रिम अंगों का नाप लिया गया।

शिविर के मुख्य अतिथि श्री मान राजेन्द्रपाल जी (समाजसेवी), अध्यक्ष श्री गंगन जी मल्हौत्रा, (चैयरमेन बालाजी समाज सेवा संघ), विशिष्ट अतिथि श्री अमित भाई पधारे। शिविर में डॉ एस.एल गुप्ता जी ने सेवाएं दी। शिविर टीम में आश्रम की ओर से श्री मान् मुकेश जी शर्मा (शिविर प्रभारी), उपस्थित रहे।

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

सब माताओं को, आदरणीय बहनों को प्रणाम करते हुए मैं जब भी आपके पास आता हूँ मन में बार –बार ये भाव रहते है कि जितना ज्यादा से ज्यादा मेरे पास जो कुछ भी है अच्छा ही है बचपन से मैंने अब तक पढ़ा सुना। संत कथा अंक की 600 कहानियाँ पढ़ी संत अंक में 274 संतों की जीवनी पढ़ी, गीता प्रेस गोरखपुर के सैंकड़ों परम् ग्रंथ पढे। सब अमृत में आपको बाँट दूं। और केवल पढ़े हुए नहीं है, जो भी समझा है जिससे मैंने ज्ञान प्राप्त किया है, मैं जो कहता हूँ कि अभी आज– कल और परसों की बात करले। सब कहते हैं भाई अभी का मतलब अभी, आज का मतलब आज छोटी सी परिभाषा कुछ मैंने कर रखी है अभी का मतलब इसी क्षण से 6 घंटे तक हमें क्या करना है? वो कहते हैं कि औरो को उपदेशता खाली रह गया आप। और जग –जग में तो लगन करो और पड़ोसी के फेरा करो और घर का पुत्र कुंवारा डोले। अपनी हालात क्या है ? अभी का मतलब 6 घंटे क्या करना है? अरे भविष्य की बात भी करेंगे दस साल बाद की भी बात करेंगे, वो परसो में करेंगे। अभी मतलब 6 घंटे में अभी अपन संकल्प करें। इसी क्षण से 6 घंटे हम क्षमताभाव में रहेंगे। अपने वो ही चीज करनी जो समझ में आ जावे।

अभी का मतलब 6 घंटे आज का मतलब 24 घंटे, कल का मतलब तीन दिवस कोई कहेंगे आप परिभाषा नहीं गढ़ रहे हो क्या? अरे ये समझ के लिए अपनों को कुछ काम करना है जीवन में भीड़ में खोने के लिए पैदा नहीं हुए है लाला।

सम्पादकीय

व्यक्ति संवेदनाओं का पुंज है। संवेदना किसी भी मानव की सहज वृत्ति है। संवेदन शून्य व्यक्ति को मानव मानना संभव नहीं है। ये संवेदनाएं हैं क्या ? वस्तुतः मानव मन भावों की एक समवेत रचना है। ये भाव नकारात्मक भी हो सकते हैं और सकारात्मक भी। पर संवेदना का सहज जुड़ाव तो सकारात्मकता से ही है।

किसी भी मनुष्य या प्राणी पर कोई संकट आये और पीड़ा का अनुभव करके किसी अन्य व्यक्ति का हृदय द्रवित हो उठे, यही संवेदना है। संवेदनाओं का यद्यपि बहुत गहन तल होता है किन्तु सामान्य व्यवहार में संवेदना का अर्थ है – किसी की खुशी में खुश, किसी के पीड़ित होने पर दुःख तथा हरेक जीव को स्वसम मानते हुए उनके साथ वैसा ही व्यवहार करना जो खुद को अच्छा लगे। यह संवेदना का एक रूप कहा जा सकता है। संवेदनाएं स्वभावजन्य भी होती हैं और परिस्थितिजन्य भी। किन्तु श्रेष्ठ बात यह है कि वे स्वभाव बन जाएं।

कुछ काव्यमय

मानव की संवेदना
विस्तार पाकर
प्राणिमात्र को अभय
कर देती है सम्पूर्ण सृष्टि को
सद्भावों से भर देती है।
जब संवेदनाएं
मर जाती हैं।
तो मानवता ठहर जाती है।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

देवप्रण प्रथम

एक बालक ने सुबह चार बजे पहाड़ी से मंत्र बोलना प्रारम्भ किया। गुरुजी ने कहा– अरे! मैंने तुझे कहा था गुप्त मंत्र है।

जिन्ह हरि कथा सुनि नहीं काना।
श्रवण रंध्र अहिभवन समाना।।
नेन दरष संत नहीं किन्हा।
लोचन मोर पंक कर लिन्हा।

शिष्य ने कहा– गुरुदेव आपने ये भी कहा था जिनके कानों में मंत्र पड़ेगा, उनका कल्याण हो जायेगा, उसका उद्धार हो जायेगा। जैसे –

परहित बस जिनके मन मायी।
ताँ कहुं जग दुर्लभ कछु नाहीं।।

ऐसे ये भगवान की कथा। भगवान ने कहा– अत्रि ऋषिजी मैं धन्य हुआ। अत्रि ऋषिजी ने कहा– प्रभु आपके दर्शन तो सब यज्ञों के समान है। अत्रि ऋषिजी से मिलकर के प्रभु आगे बढ़ते है। शरभंग ऋषिजी की कथा आती है। शरभंग ऋषि ऐसे ऋषि, राम हि केवल प्रेम प्यारा। इस तथ्य को समझ गये। उनके हृदय में भगवान प्रकट हो गये। उन्होंने कहा– भगवान राम मैं तो आपको तापस वेश में चाहता हूँ। पुनः तापस वेश में प्रकट हो गये। शरभंग ऋषि ने अपनी योग अग्नि से अपने आप का चौला बदल दिया।

एक वकील ऑफिस में बैठे,
सोच रहे थे अपने दिल,
फला दफा पर बहस करूंगा,
प्वाईन्ट मेरा है बड़ा प्रबल,

उधर कटा वारंट मौत का,
कल की पेशी पड़ी रही,
परदेशी तो हुआ रवाना,
प्यारी काया पड़ी रही।

तो ये चोला, छूटेगा या व्यक्ति समभाव से छूटने का अवसर ले आया, समभाव में हो जावे।

पहला स्टेशन बचपन का,
लगता सबको प्यारा है।
खेल–खिलौने खेल रहा तूं,
देखा अजब नजारा है।।
खेल – खेल में रमा रहा तूं,
गाड़ी आगे निकल गयी।
रेल चली रे भई,
रेल चली इस जीवन की रेल चली।।

शरभंग ऋषि धन्य–धन्य हो गये। बोलिये शरभंग ऋषिजी महाराज की जय। विराद नाम रो एक राक्षस आया। बड़ा शरीर था, सीताजी की तरफ देखा, झपट्टा मारा खा जाऊंगा सीताजी को। खा जाऊंगा राम को, खा जाऊंगा लक्ष्मण को। और लक्ष्मणजी ने उसके हाथ काट दिये, पैर काट दिये और वहीं पे गाड़ दिया। ये विराद राक्षस का मतलब, काटों का जंगल मत बोना। आप मक्किया रा दाणा बोई दिजो। एक मक्किया रा दाणांऊ सौ दाणा पैदा वेई जाई।

पेली माँ बचपन में कहती थी– ये कोमल बाल और ये छिलका और जाणे भगवान पेराई दी दो। अनार में पेरोवे या मक्किया रा दाणा पेरोवे। जाणे एक–एक दाणो विन्दी दी दो। कब किसके काम आ जाऐ? नदिया अपना जल नहीं पीती, वृक्ष अपना फल नहीं खाते। यो मक्कियो भी खुद रा दाणा खुद नहीं जीमे। यो आपणे लिये समर्पित कर देवें। ईसो जीवन वेणो चावे। त्याग रो वैराग रो। भगवान राम भी राजी वेई ग्या। क्योंकि सुतीक्ष्ण ऋषि, अगत्स्यजी रा शिष्य दौड़िया दौड़िया आया। राम भगवान आपरी जय हो।

– कैलाश 'मानव'

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

कलेक्टर ने भरसक कोशिश की जितनी मदद हो की जाये मगर नियमों की खानापूर्ति तो आवश्यक थी। उन्होंने अपनी लाचारी प्रकट करते हुए कहा कि बिना रजिस्ट्रेशन के तो वे जमीन नहीं दे सकते। यह कह कर वे चुप हो गये। थोड़ी देर सोचने के बाद बोले कि उदयपुर में प्रताप नगर में ओफिस है, वहां वे फोन कर देंगे, आप मामूली औपचारिकताएं हैं वो पूर्ण कर रजिस्ट्रेशन करवा लो तो जमीन भी मिल जायेगी तथा अन्य कार्यों में भी आसानी हो जायेगी।

शिविर में पी.जी. जैन दिन भर साथ रहे। वे भी सेवा की विभिन्न गतिविधियों में अपना योगदान देकर बहुत खुश थे। कल्पना के साथ कुछ अन्य लोग मिल गये और महिनों से नहीं नहाये बच्चों को साबुन रगड़ रगड़ कर स्नान करवाया। इस बार का शिविर पहले की अपेक्षा अत्यधिक संतोषप्रद रहा। पी.जी. जैन उसके साथ ही घर लौटे। कैलाश ने उन्हें भोजन पर आमन्त्रित किया तो वे भाव विह्वल हो उठे। बोले –26 साल से वे ऐसी किसी सेवा भावी संस्था को ढूंढ रहे थे जो भेदभाव से ऊपर उठ कर कार्य करे। नारायण सेवा में यह सब गुण देखकर ही वे इससे जुड़े हैं। इतना कहने के बाद जो वे बोले उससे इनके रिश्ते ही बदल गये। जैन ने कहा कि उन्हें भगवान ने सब कुछ दिया है मगर बहन नहीं दी। आपके यहां आकर कमला का स्नेह पा ऐसा महसूस हो रहा है जैसे यह कमी भी पूरी हो गई। कमला पास ही खड़ी थी, उनके इतना कहते ही वह भी भावुक हो उठी और उनके चरण स्पर्श कर बोली–आज से आप मेरे पूज्य भाई हैं। जैन ने कमला को ऊपर उठाया और कहा–अब मुझे सब कुछ मिल गया है, आज से मैं जीवन भर आपके साथ हूं, अब मुझे भी नारायण सेवा ही करनी है।

कलेक्टर ने प्रताप नगर स्थित कार्यालय में फोन कर दिया था जिससे नारायण सेवा का रजिस्ट्रेशन सोसाइटी एक्ट के तहत हो गया और रजिस्ट्रेशन नंबर मिल गया। यह होते ही यू.आई.टी. में जमीन हेतु आवेदन भी कर दिया और कलेक्टर को भी सूचना दे दी। इस बीच पी.जी. जैन ने आश्वासन दिया कि बाहर उनकी बहुत जान–पहचान है, कभी चन्दे की आवश्यकता हो तो वे कैलाश के साथ लेकर अच्छा चन्दा करवा सकते हैं। चन्दे की तो सदैव आवश्यकता रहती ही थी मगर सिर्फ इसी के लिये बाहर जाकर समय व्यतीत करना निरर्थक था। इस पर भी चन्दा हो ही जायगा या इनका उत्साह तब तक बरकरार रहेगा इसकी कोई गारन्टी नहीं थी।

अंश - 137

कार्य के प्रति निष्ठा

टोडरमल एक प्रसिद्ध साहित्यकार थे। उत्कृष्ट लेखन के धनी इन साहित्यकार में अपने काम के प्रति अद्भुत लगन थी। वे जिस भी विषय पर लिखना तय कर लेते थे, उसे एक बार हाथ में लेने पर पूरा करके ही छोड़ते थे। एक समय वे अपने ग्रंथ 'मोक्षमार्ग' पर काम कर रहे थे। यह विख्यात ग्रंथ है और आज भी बहुसंख्यक लोगों के लिए मार्गदर्शक बना हुआ है।

जब टोडरमल के मस्तिष्क में मोक्षमार्ग लिखने का विचार आया तो उसके लिए उन्होंने अनेक लोगों से सामग्री जुटानी आरम्भ की। टोडरमल अपने काम में इतने डूब गए कि उन्हें रात और दिन का भान ही नहीं रहा और न खाने–पीने की सुध रही। घर के लोग उनका ध्यान रखते और वे अपना ग्रंथ लिखते रहते।

एक दिन टोडरमल अपनी माँ से बोले, "माँ ! आज सब्जी में नमक नहीं है। लगता है आप नमक डालना भूल गईं।" उनकी बात सुनकर माँ मुसकराते हुए बोली, "बेटा ! लगता है आज तुमने अपना ग्रंथ पूरा कर लिया है ?" माँ की बात सुनकर टोडरमल चौंके और हैरानी से बोले, "हाँ माँ, मैंने अपना ग्रंथ पूरा कर लिया है, लेकिन आपको कैसे पता चला?"

माँ ने जवाब दिया, "बेटा !

नमक तो मैं तुम्हारे भोजन में पिछले छः महीने से नहीं डाल रही थी, किन्तु उसका अभाव तुम्हें आज पहली बार महसूस हुआ है। इसी से मैंने जाना। जब तक तुम्हारे मस्तिष्क में पुस्तक की विषय –सामग्री थी, तब तक नमक जैसी वस्तुओं के लिए स्थान नहीं था। अब जब वह जगह खाली हो गई, तो इन्द्रियों के रसों ने उसे भरना शुरू कर दिया।"

दरअसल, कार्य के प्रति लगन और निष्ठा हो तो कार्य उत्कृष्टता के साथ पूरा होता है। इसलिए जब भी कोई कार्य हाथ में लें तो उसे पूरी लगन के साथ करें।

सफलता ट्रेन की तरह होती है। इसमें कड़ी मेहनत, ध्यान केन्द्रित करने, भाग्य व दूरदर्शिता के कई डिब्बे होते हैं, और इन डिब्बों को आत्मविश्वास का इंजन खींचता है।

– सेवक प्रशान्त भैया

बड़े काम की चीज है राई

शायद की कोई राई को नहीं पहचानता होगा। छोटी–छोटी गोल–गोल राईलाल और काले दानों में अक्सर मिलती है। बाहर के देशों में सफेद रंग की राई भी मिलती हैं। राई के दाने सरसों के दानों से काफी मिलते हैं। बस राई सरसों से थोड़ी छोटी होती है। राई ग्रीष्म ऋतु में पककर तैयार होती है। राई के बीजों का तेल भी निकाला जाता है।

कुछ घरेलू उपयोग :– राई रसोई के मसाले के रूप में काफी महत्वपूर्ण है जिसका उपयोग दाल, साग, साग, रायता, अचार आदि में किया जाता है। दाल, साग, सब्जी और रायते में इसका छौक लगाया जाता है। अचार में इसका प्रयोग अचार में खट्टापन लाने के लिए किया जाता है। राई को 'कांजी' बनाते समय भी प्रयोग में लाया जाता है।

राई से बनने वाले तेल को औषधि के रूप में प्रयोग में लाया जा सकता है। राई के दानों को चोट, घाव आदि को ठीक करने के लिए लगाई जा सकती है। पुलटिस लगाने से पूर्व वैद्य की सलाह अवश्य लेनी चाहिए। अपनी मर्जी से नहीं लगानी चाहिए।

औषधि के रूप में राई का प्रयोग :–

- जुकाम होने पर राई को शहद में अच्छी तरह मिलाकर सूंघने से तुरंत राहत मिलेगी।
- चर्म रोग होने पर राई को सिरके के साथ पीसकर उस जगह लेप लगाएं।
- लाल राई का तेल कान में डालने से कान दर्द, कान में फोड़े फुंसी को कम करता है।
- जोड़ो का दर्द होने पररराई के तेल से कुछ दिन लगातार मालिश करने से राहत मिलती है।
- वैसे केई भी घरेलू नुस्खा प्रयोग में लाने से पूर्ववैद्य, हकीम से जानकारी अवश्य लें लें।निश्चित मात्रा व कितने समयतक नुस्खे का प्रयोग करना है, पूछ लें।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

अद्भुत हो गया। सोनीजी ने कहा कि– आप ऐसा करो कैलाशजी। डेढ़ महिने बाद परीक्षा है, परीक्षा भी देने आप जयपुर आओगे। सात पेपर है, आप छः पेपर एकदम से कर लो, परीक्षा दे दो। सेवनटी फाईव नम्बर आ जावे तो आप दो साल बाद, तीन साल बाद जब भी दोगे तो आपको एक ही पेपर देना रहेगा। छः पेपर ले लूं तो एकदम आपको छूट मिल जाऐगी। तो दो साल बाद एक पेपर दे देना हंसते–खेलते। बात जँच गयी, पण देखे सोनी जी, फिर वो एक पेपर की पुस्तकें मेरे कमरे में नहीं आणी चाहिये। अरे! नहीं आएगी, मेरे को तो सांतवा पेपर देना है, आप छः पेपर दे दो। सातवां पेपर आप देने ही मत जाना। वाह बात हो गयी। अच्छी बात है। खाली भी है, टाईम भी है, समय का सद्उपयोग हो जायेगा। दो महिने बाद परीक्षा है, फार्म भर दिया। अब वो छः पेपर की किताबें पढ़ी। सातवां पेपर भी कभी न कभी किताब पढ़ना ही था। कमरा तो एक ही था, दोनों हम साथ ही पढ़ते, और सातवें पेपर की किताब पढ़नी आ गयी। कोई बात नही पढ़नी आ गई तो पढ़नी आ गई। पेपर देने नहीं जाएगे। और छः पेपर दिये और सातवां पेपर भी देने के लिये किसी शक्ति ने खींच लिया। पेन नहीं खेलूंगा, पेनभी खुलवा दिया। अरे! कैलाश, ये तो प्रश्न बड़े सरल है। लिखण चालू कर दिया, सातवां पेपर का। फिर होश आया। सातवां पेपर नहीं देण अपने को। तारीख निश्चित हो गयी। 16 फरवरी को 1989 को, कैलाशजी गोरेगाँव जाना है, रायगढ़ जाना है। जरूर जरूर खुशियाँ हो गयी। छुट्टियाँ ले ली, बार– बार फोन आते रहे, बाबूजी आपकी इन्तजार है। आप पधारो, बाम्बे तो बहुत गया था। बाम्बे से गोरेगाँव करीबन दो सौ किलोमीटर खेड़ के पास में, रायगढ़ जिला। पनवेल होकर आगे जाते हैं। समुद्र के बीच में भी एक सेतु है, लम्बी दूरी का रास्ता। वहाँ बस स्टेण्ड पहुँचे, बस लेट हो गयी थी दो– तीन घण्टा। बाबूजी खुद बैठे रहे घण्टे दो घण्टे, फिर अपने साथियों को बैठाया। अरे! क्या बात हुई? आये नहीं, कैलाशजी भाई साहब आये नहीं। अति आतुर, ये प्रतीक्षा।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 263 (कैलाश 'मानव')

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन

2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार

2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं

2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं

2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी

2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र

आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन

वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ

6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ

विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पैन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूटेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023